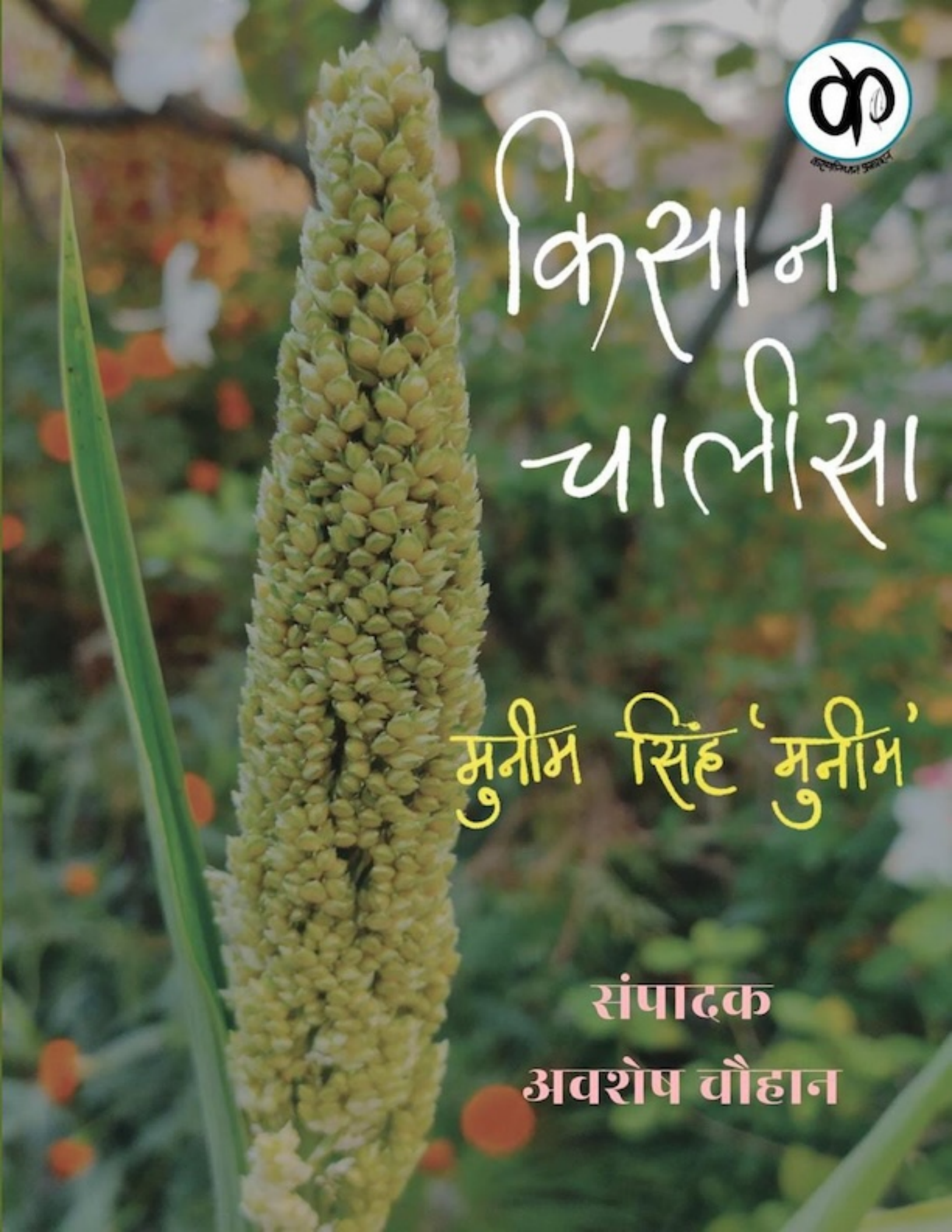

किसान चालीसा

मुनीम सिंह 'मुनीम'

संपादक
अवशेष चौहान

किसान चालीसा

मुनीम सिंह 'मुनीम'

संपादक:

अवशेष चौहान

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: दिसंबर, 2024

© अवशेष चौहान

अनुक्रम

दो शब्द	4
संपादक की कलम से	6
किसान आरती	8
किसान चालीसा	11
किसान दोहावली	18
किसान लोक गीत	20
बीमारियों का आयुर्वेदिक इलाज	22
किसानों को समर्पित कवि की अन्य रचनायें	27
कृषि पहेलियां : (बुझौवल)	37
कृषि पहेलियों के उत्तर	43
आँधी के आम : कवि की अन्य पहेलियाँ	46
कृषि लोकोक्तियाँ	48
फसलें	51
ध्यान दें…	55
आप चुनें कौन सी फसलें आपके लिए उपयोगी हैं	57
कृषि में अधिक उत्पादन - अधिक लाभ हेतु कवि के सुझाव	58
पशु रोग और चिकित्सा	60
कवि परिचय	62

मैं ने उस जान-ए-बहाराँ को बहुत याद किया

जब कोई फूल मिरी शाख़-ए-हुनर पर निकला

— अहमद फ़राज़

दो शब्द

भारतीय साहित्य का कल्याणकारी पक्ष प्रत्येक रचना में विद्यमान रहता है। मुनीमसिंह 'मुनीम' की प्रस्तुत रचना किसान चालीसा अत्यन्त ही व्यवहारिक स्तर पर किसान के मर्म और कर्म को प्रकट करती है। विद्वान कवि ने किसान की समस्या को उठाया है, समाधान प्रस्तुत किया है साथ ही श्रम की महत्ता भी किसान के सन्दर्भ में रेखांकित की है। अध्यापक और कृषि जीवन के केन्द्र में रहते हुए मुनीमसिंह 'मुनीम' ने घाघ-भड्डरी, भानुप्रताप सिंह 'भानु' व किसान कवि निर्भय की परम्परा को आगे बढ़ाया है। शिल्प और वाग्विदग्धता से अलग हटकर कवि को कुछ कहना है। वस्तुतः यह लक्ष्य पूर्ण काव्य सिद्धि ही है कृषि विज्ञान को कविता के रूप में ढालने का सुन्दर प्रयास। कवि ही नहीं कवि के साथ सम्पूर्ण देश कहता है।

जो किसान को अनहित करिहैं।
देश-द्रोह को पातक भरिहैं।।
कृषक संगठन बिलकुल नाहीं।
अतः हाथ मीजैं पछताहीं।।

किसान संगठनों का संगठित और सक्रिय बने रहना अत्यंत आवश्यक है, जैसे कि भारत के कुछ राज्यों में यह सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। सरल व बौधगम्य भाषा में कवि की इस रचना का सर्वत्र स्वागत हो ऐसी हम सब कामना करते हैं।

श्रीकृष्ण मिश्र

इतिहासकार, अधिवक्ता व सचिव,

सरस्वती साधना परिषद

मैनपुरी

संपादक की कलम से

साल 2001 में, मैं अपने गाँव के जूनियर स्कूल में सातवीं कक्षा का छात्र था।

उसी दौरान हमारे स्कूल में हिंदी के एक नए शिक्षक का तबादला हो कर आया, जो कवि भी थे और उम्दा गद्यकार भी। अपने रचनात्मक स्वभाव के कारण कक्षा मे वे अक्सर लेखन की दुनिया की बातें करते और अपना लिखा हुआ भी सुनाते। उन्हें आयुर्वेद का गहरा ज्ञान था, वे आयुर्वेद पर लिखी हुई अपनी चौपाइयों, दोहों और खेती-किसानी की पहेलियों के पर्चे छपवाकर लोगों में बाँटते थे। उनका व्यक्तित्व मुझे बेहद प्रभावित कर गया। यही वो समय था जब साहित्य के प्रति मेरी रुचि बढ़ने लगी। धीरे-धीरे मैं उनका प्रिय छात्र बन गया। एक दिन उन्होंने मुझे काव्यात्मक शैली में लिखी हुई अपनी एक छोटी-सी किताब उपहार में दी। जो हमारे क़स्बे की एक प्रिंटिंग प्रेस के साधारण कागज़ पर छपी हुई थी। जिसे मैंने सहेज कर रख लिया था। उनके सान्निध्य में मैंने सिर्फ दो साल बिताए, आठवीं कक्षा के बाद वो स्कूल छूट गया। लेकिन उन दो वर्षों ने मेरी जिंदगी को किताबों से जोड़ दिया। कभी-कभी सोचता हूँ, कि अगर वे मुझे न मिले होते, तो शायद किताबों से गहरी दोस्ती और मेरी कल्पनाओं को पंख कभी न मिले होते।

जब भी गाँव जाता हूँ, तो उनसे मिलने उनके गाँव जरूर जाता हूँ। गाँव-कस्बों के कई अन्य लेखकों की तरह वे भी गुमनाम होकर अपने गाँव में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इस डिजिटल युग में मेरी ख्वाहिश थी कि उनका लिखा हुआ कहीं तो दर्ज हो, ताकि उनकी